

भारत के कोनों से महिलाओं की कहानियां

एक त्रैमासिक ई-न्यूज़लेटर



असली पारिस्थिति की विज्ञानी हम हैं

न्यूज़लेटर के इस संस्करण में, हम आपके लिए कुछ मनोरम अंतर्दृष्टियाँ लेकर आए हैं जो कि जैव विविधता और आदिवासी महिलाओं के पारंपरिक ज्ञान पर केंद्रित हाल में हुई एक कार्यशाला में एकत्रित की गई हैं।

आकर्षक वन भ्रमण के दौरान, महिलाओं ने पौधों और पेड़ों के असामान्य औषधीय गुणों के खुलासे से लेकर पीढ़ियों से चले आ रहे स्वादिष्ट व्यंजनों की विधियों तक सांझा की -- इस समाचार पत्र के माध्यम से, हम आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक समृद्धि और समुदायों और मनुष्यों और प्रकृति के बीच अंतर्संबंध की उनकी समझ का सम्मान करने और उसे बढ़ाने की आशा करते हैं।

महिलाएं ने अपने पारिस्थितिक ज्ञान को गर्व से सांझा किया

पारंपरिक ज्ञान और जैव विविधता पर आदिवासी महिलाओं के साथ पांच दिवसीय आदान-प्रदान कार्यक्रम में पांच राज्यों: मध्य प्रदेश, झारखंड, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और कर्नाटक की महिलाओं ने अपना ज्ञान और अनुभव एक दूसरे से बांटा।

महिलाएं अपने इलाके के जंगलों में जैव विविधता के बारे में, भोजन, चिकित्सा और आध्यात्मिकता के लिए अपने संसाधनों के उपयोग की जानकारी साझा करने के लिए एक साथ आई थीं। जंगलों की सैर करते-करते महिलाओं ने आपसी बातचीत में व्यंजन की विधियां, विविध वनस्पतियों और उनसे दवाईयां तैयार करने के विधियां साझा कीं।

साथ ही साथ जीव-जंतु और गोत्रों और पौधों, जानवरों के बीच संबंधों के बारे में बात की। आगे बढ़ते हुए उन्होंने मनुष्यों के आपसी संबंधों और उनके त्योहारों में प्रकृति के महत्व के बारे में बात की।

महिलाएं औषधीय जड़ी
बूटियों और पौधों पर
अपना पारंपरिक ज्ञान
बांटते हुए



महिलाएं के लिए कार्यक्रम में अपनी दादी-नानी के नुस्खों को याद करना दिलचस्प रहा। पाक व्यंजनों की सुगंध और स्वाद जो उन्होंने एक समय अनुभव किए गए थे, उन सभी चीजों को यादें ताज़ा हो गईं। महिलाएं अब भी वह सारे व्यंजन बनाना और चखना चाहती हैं लेकिन कुछ की विधियां उनकी याद से खो चुकी हैं।

क्योंकि उनके वन परिदृश्यों पर बाहरी लोगों द्वारा आक्रमण किया गया है, विकास परियोजनाओं, और गैर-वानिकी गतिविधियों की तादाद बढ़ती चली गई, आदिवासी औरतों को पारंपरिक चीजें भूलती चली गईं। जहां कहीं भी प्रथाएं अधिक जीवंत हैं, ऐसा इसलिए है क्योंकि आदिवासी अधिक भाग्यशाली रहे हैं और बाहरी लोगों की घुसपैठ कम रही है और साथ ही जंगलों तक आदिवासी लोगों की पहुंच अब भी बरकरार है। महिलाएं को पता चला कि प्रांत दर प्रांत, पौधों की प्रजातियाँ समान थीं लेकिन उनके अलग-अलग नाम और उपयोग, अथवा, कई ऐसी अलग किस्म की प्रजातियाँ थीं जिनके उपयोग एक से थे।



पन्ना के जंगल में जैव विविधता पदयात्रा का नेतृत्व निर्मला केरकेट्टा ने किया, जो मूल ज्ञान से पारंपरिक उपचार की जानकार हैं और उसका इस्तेमाल भी करती हैं। उनका मानना है कि "धरती में जितने भी पेड़-पौधे, घास-पात है, सब औषधि हैं।" वह कहती हैं कि यह धरती सिर्फ इंसानों के लिए नहीं है, इसमें पेड़-पौधे और जीव-जंतु भी रहते हैं। कीड़े और सूक्ष्मजीव जिनके साथ हम सभी एक रिश्ता रखते करते हैं।

यह पदयात्रा महुआ के पेड़ से शुरू हुई जो आदिवासी पहचान का प्रतीक है – जिसकी महिलाएं पूजा करती हैं और अपने भोजन और दवाइयों के लिए विभिन्न तरीकों से उपयोग करती हैं।



यह पदयात्रा महुआ के पेड़ से शुरू हुई जो आदिवासी पहचान का प्रतीक है – जिसकी महिलाएं पूजा करती हैं और अपने भोजन और दवाइयों के लिए विभिन्न तरीकों से उपयोग करती हैं।

चील चिट्टी एक पवित्र माना जाने वाला पौधा है और इसका उपयोग कई अनुष्ठान समारोहों में किया जाता है।

बरियारी घास का उपयोग अनचाहे गर्भ को समाप्त करने के लिए किया जाता है।

बइसके अलावा अकवंड और कोरैया ब्लड शुगर लेवल को भी नियंत्रण में रखते हैं। अकवंड के फूल जिन्हें काली मिर्च और गुड़ के साथ पीसा जाता है, वह कुत्ते के काटने के इलाज के रूप में कार्य करता है।

जंगल में टहलते वक्त महिलाओं को कांटेदार और विषैला धतूरा भी दिखाई दिया जिसे उन्होंने एक दर्दनिवारक के रूप में वर्णित किया, लेकिन यह भी चेतावनी दी गई है कि यह इतना व्यसनी है कि इससे नशा हो जाता है। इसका उपयोग भांग बनाने में किया जाता है जो की एक नशीला पेय है।

और ऐसी कई बातचीत साझा की गईं और संसाधनों की पहचान की गईं। कई लोगों ने अपने जंगलों में वापस जाने और अपनी पारंपरिक प्रजातियों को पुनर्जीवित और पुनर्स्थापित के लिए एक-दूसरे से प्रेरणा ली।



जैव विविधता पदयात्रा
दौरान पौधों औषधीय
गुण का पहचान करती
हुई महिलाएं



महिलाओं ने विकास, आदिवासियों की पहचान और उनके वन ज्ञान की रक्षा के अधिकार की प्रति न्यूनीकरणवादी दृष्टिकोण को चुनौती दी

इस एक्सचेंज ने महिलाओं को अपनी समस्याएं और चुनौतियां जिनका उन्हें जंगल जाते वक्त हर रोज सामना करना पड़ता है, उन्हें साझा करने के लिए जगह दी. उदाहरण के लिए, जब वे जंगल में भोजन के लिए जलाऊ लकड़ी लाने जाती हैं, तब उनकी कुल्हाड़ियाँ और हंसिया छीन ली जाती हैं. इसपर उन्होंने कहा, "अरे कुल्हाड़ी तो हमारी जान है (कुल्हाड़ी हमारा जीवन है)." कुल्हाड़ी का उपयोग नष्ट करने के लिए नहीं बल्कि जीवित रहने के लिए किया जाता है - उनके भोजन, आवास, ईंधन की लकड़ी - महिलाओं का दावा है कि इनमें से कोई भी जंगल में विनाश नहीं लाती.

विदिशा की जर्जर पत्थर खदानों से आई महिलाओं ने याद किया कि एक समय था जब उनके पास इनमें से कुछ वनस्पतियाँ थीं, लेकिन भूजल की कमी और अंधाधुंध खनन के लिए जंगलों की कटाई ने इन प्रजातियों को विलुप्त बना दिया है. उनका मौसमी खाना बनाना अब इस विलासिता की अनुमति नहीं देता है. उन्हें आम बीमारियों का इलाज जंगल की बजाय अस्पतालों के काउंटर से करना पड़ता है.

विदिशा के गंजबासौदा में
पत्थर खदान से सटे एक
प्लॉट पर पत्थरों का ढेर



विदिशा में स्थित एक
पत्थर की खदान



पन्ना में हाल तक महिलाएं इन प्रजातियों को एकत्र करती और पकाती थीं, लेकिन टाइगर रिजर्व जब बना तो उसमें प्रवेश पर प्रतिबंध लग गया। जिसके कारण उन्हें तेजी से विविधता से भरपूर अपने मौसमी और जंगल के उत्पादों से बने भोजन की बजाय पानी वाली दाल और एक रोटी खाने को मजबूर कर दिया है। वह समुदाय जिसके पास जंगली भोजन का समृद्ध ज्ञान था, वह अब सिलिकोसिस, टीबी, और कुपोषण जैसी बीमारियों से जूझ रहा है।

चतरा की महिलाओं ने भूमि बैंकों अथवा बुनियादी ढांचा या विकास परियोजनाएं के लिए अपनी जमीन खोने के बारे में अपनी व्यथा साझा की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार यह सारी चीजें वन संसाधनों तक उनकी पहुंच को प्रभावित और वन आधारित ज्ञान का अभ्यास करने के अधिकार को प्रभावित कर रहीं हैं।

छत्तीसगढ़ में हाथियों के हमले चिंता का विषय बबने हुआ है। असंख्य विकास परियोजनाओं से हाथियों के आने-जाने का रास्ता बाधित हो रहा है। परिणाम स्वरूप महिलाओं की पूरे साल की फसलें हाथियों द्वारा रौंद दी जाती है और साथ ही साथ उनके घरों पर भी हमले बढ़े हैं। यहां तक कि इंसानों पर भी इन भूखे हाथियों ने हमला कर दिया। जानवर और आदिवासी दोनों अपने जंगल और भोजन तक पहुंच खो रहे हैं, इसलिए छत्तीसगढ़ की महिलाएं ने साझा किया कि वे कैसे अपने सामुदायिक वनों की रक्षा कर रही हैं।

जो महिलाएं कर्नाटक में निम्नीकृत लौह-अयस्क खदानों वाली जगहों से आई थीं उन्हें वन में रहने वाले समुदायों के समृद्ध ज्ञान को जानकर अचंभा हुआ।

कर्नाटक में स्थित एक
लौह अयस्क खदान



वन नीति कैसी दिखनी चाहिए : महिलाएं रास्ता तय करते हुए

महिलाओं के दृष्टिकोण से, वनों में महिलाओं की मूल ज़रूरतों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, भोजन, जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करना, वन उपज इकट्ठा करना, आजीविका के लिए मवेशी चराना जैसी मानव निर्वाह के लिए अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियां। ये ऐसी गतिविधियां नहीं हैं जो वनों को नष्ट करती हैं। ये आदिवासी महिलाओं को प्राकृतिक संसाधन प्रशासन में एक महत्वपूर्ण हितधारक बनाते हैं। जिसमें शामिल है, भूमि पर मालिकाना अधिकार, जैव विविधता पर ज्ञान प्राप्त करना और उसका प्रसार करना और वन उपज और उनकी पारंपरिक प्रथाओं को अंतर-पीढ़ीगत रूप से प्रसारित करना उनकी भलाई को बढ़ाने का अधिकार। यह उनकी पहचान को पुनः प्राप्त करने के लिए भी महत्वपूर्ण है खासकर के एक ऐसे समय में जहां बाहरी अर्थशास्त्र जो कई मामलों में जेंडर, जाति और जनजाति को लेकर निजी मुनाफ़े के लिए नकारात्मक तरीके से महिलाओं को समाज में कोने धकेल रहा है।

अतः अपनी आवश्यकता पर चर्चा करने वाली महिलाओं में एकमतता थी वन भूमि पर उनका अधिकार एफआरए और उनकी पारंपरिक प्रथाओं के तहत मिलना चाहिए। महिलाएं इस बात से सहमत थीं कि उनके समुदायों को उनके जंगलों के बारे में व्यापक जानकारी है और उनका अस्तित्व इन संसाधनों पर निर्भर करता है। इसलिए, “नहीं छोड़ेंगे” का नारा जब उनके वन अधिकारों की बात आती है तो उनके जुबान पर दृढ़ता से आता है।

उन्होंने इस बात पर जानकारी का आदान-प्रदान किया कि उनका प्रत्येक समूह किस प्रकार प्रयास कर रहा है। कैसे वे वन संसाधनों को मैप कर रही हैं और महिलाओं को उनके वन अधिकारों के दावे पेश करने में मदद कर रही हैं। एफआरए के तहत उनके दावों की प्रगति पर चर्चा करते हुए, महिलाओं ने सीखा कि वे अपने पारंपरिक और जैव विविधता के बारे में ज्ञान का प्रदर्शन बाहरी दुनिया में कैसे कर सकती हैं।



भूमि अधिग्रहण और वन अधिकारों के हनन के प्रभाव को दर्शाती हुई महिलाएं.



जैव विविधता और संसाधन मानचित्रण:

उदयपुर से दुर्गा कराडी की अगुवाई में महिलाओं ने अपने विचार साझा किये: इसकी शुरुआत नज़रिया नक्शा बनाने से हुई जहां महिलाओं ने प्रदर्शित किया उनके गाँव के प्रमुख स्थान, सीमाएँ, संसाधन और बुनियादी ढाँचा और उनके जंगल. उन्होंने विभिन्न श्रेणियों में संसाधनों की एक सूची बनाई जिन्हे वे परंपरागत रूप से वर्गीकृत करते है. फिर इस बारे में बातचीत हुई की कैसे इस मानचित्र का उपयोग उनके सामुदायिक अधिकारों का दावा करने के लिए किया जा सकता ह.



महिलाओं द्वारा
सामुदायिक संसाधनों
का मानचित्रण



महिलाओं का संकल्प

इस प्रकार वन एक विशाल, पोषण संपदा का स्रोत हैं जिसमें पेड़ - पौधे उपचार के गुणों से भरपूर हैं . औषधीय जड़ी-बूटियों और बीमारियों से लड़ने की उनकी क्षमता पर जो सत्र हुआ उससे महिलाओं में जंगल के भूले हुए नुस्खे और उपचार जो बहुत आसानी से उपलब्ध हैं उनके बारे में जागरूकता पैदा करने का उत्साह फिर से बढ़ा. महिलाओं द्वारा अपने स्वयं के ज्ञान की पहचान का महत्व और इन संसाधनों पर अपने अधिकारों की पुनः पुष्टि को सभी ने घर किया. खासकर, जब महिलाएं टीबी और कुपोषण समेत अन्य दुर्बल करने वाली बीमारियों से जूझ रही हैं जिन पर सार्वजनिक स्वास्थ्य के तंत्रों का ध्यान नहीं जा रहा. ऐसे में जमीनी स्तर पे सामुदायिक स्वास्थ्य के लिए रणनीति बनाने के बारे में बातचीत और पारिस्थितिक संरक्षण उनके लिए सामूहिक कार्य का केंद्र बिंदु बन गया. उन्होंने चर्चा की कि वे अपने समुदायों में महिलाओं को एक साथ लाकर सक्रिय रूप से पोषण और स्वास्थ्य से संबंधित उनके ज्ञान को उपयोग में कैसे ला सकते हैं.

कुछ महिलाएँ बीज वापस ले गईं, कुछ पौधे मगर सभी अपने साथ इस कार्यक्रम में सांझा किए जंगल में सह-अस्तित्व के अनुभवों को साथ ले गए.

एक पारंपरिक नुस्खा साझा किया गया:

महुआ का अचार

सामग्री -

महुआ - 1 किलो, सरसों का तेल - 1 किलो, नमक - 10 ग्राम, मेथी - 100 ग्राम, सरसों - 100 ग्राम, मंगरैला (निगेला बीज) - 100 ग्राम, जीरा - 100 ग्राम, हल्दी - 250 ग्राम, अजवाइन - 100 ग्राम, लहसुन - 250 ग्राम, अदरक - 250 ग्राम, हरी मिर्च - 250 ग्राम, चुकंदर - 250 ग्राम, गाजर - 250 ग्राम, कश्मीरी मिर्च - 250 ग्राम, सिरका - 100 ग्राम, हींग - 10 ग्राम

तरीका -

सबसे पहले महुआ को धोकर सुखा लिया जाता है. इसे सरसों का तेल में तब तक तला जाता है जब तक कि यह हल्का लाल न हो जाए और फिर निकाल लिया जाता है. स्वाद के लिए गाजर, चुकंदर, लहसुन, हरा मिर्च को हल्का लाल होने तक भूनते हैं फिर ठंडा करते हैं. अचार के मसाले के लिए मेथी, सरसों, हींग, जीरा, कश्मीरी मिर्च को पीस कर गरम तेल में भूनकर ठंडा कर लें. भुना हुआ महुआ, सब्जी के मिश्रण और अचार के मसाले को मिलाकर एक जार में रख दिया जाता है. जिसके बाद इसे ठंडा करना है.

महुआ का अचार बनाने
की तैयारी



यह न्यूज़लेटर मुख्य रूप से एक सूचना मंच के रूप में जिसके माध्यम से ज़मीनी स्तर पर काम करने वाले समूह और खनन प्रभावित समुदायों के बीच समाचार और कहानियों के आदान-प्रदान होता है. हम समुदायों और स्थानीय समूहों से इस न्यूज़लेटर में योगदान आमंत्रित करते हैं. हम युवाओं को भी प्रोत्साहित करते हैं की वे कहानियों और डेटा को संकलित करने में हमारे साथ शामिल हों. आप अपनी तस्वीरें और कहानियाँ किसी भी भारतीय भाषा में हमें भेज सकते है.

dhaatri@gmail.com पर हमें ईमेल करें